ISBN: 978-81-949512-6-1

भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
(कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग)
दलहन विकास निदेशालय
छठवीं मंजिल, विन्ध्याचल भवन
भोपाल-462004 (म.प्र.)

सत्यमेव जयते

Government of India
Ministry of Agriculture & Farmers Welfare,
Deptt. of Agriculture, Cooperation & Farmers Welfare
Directorate of Pulses Development
6th Floor, Vindhyachal Bhavan
Bhopal - 462004 (M.P.)

E-mail: dpd.mp@nic.in, Telefax: 0755-2571678, Phone: 0755-2550353/ 2572313

मोठ

वैज्ञानिक नामः विग्ना एकोन्टिफोलिया

क्षेत्रफल : 10.95 लाख हे.
उत्पादन : 3.34 लाख टन
उपज : 305 कि.ग्रा./हे.

(औसत 2014–15 से 2018–19)
सर्वोच्च उत्पादन –
8 लाख टन (2010–11)

मोठ का क्षेत्र उत्पादन एवं उपज (2010–11 से 2018–19)

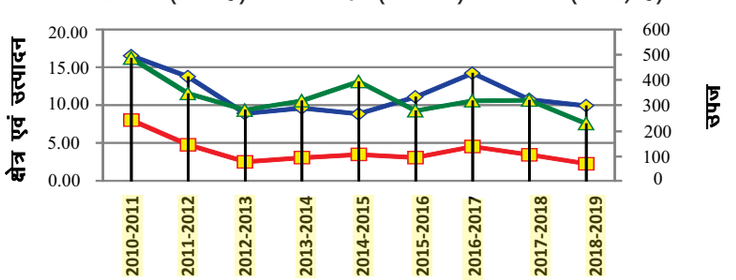

प्रमुख राज्य (औसत : 2014–15 से 2018–19)

(क्षेत्रफल : लाख हे., उत्पादन : लाख टन, उपज : कि.ग्रा./हे.)

मुख्य राज्य	क्षेत्रफल	% योगदान	उत्पादन	% योगदान	उपज
राजस्थान	10.73	98	3.24	97	302
गुजरात	0.20	2	0.10	3	479
उपरोक्त योग	**10.93**	**(100%)**	**3.34**	**(100%)**	**305**
सम्पूर्ण भारत	**10.95**		**3.34**		**305**

प्रमुख जिले (2018–19)

प्रमुख राज्य	वर्ष	प्रमुख जिले
राजस्थान (100%)	2018–19	बीकानेर, चूरू, नागौर, जोधपुर, बाड़मेर, हनुमानगढ़, जैसलमेर
गुजरात (99%)	2017–18	कच्छ, अहमदाबाद, बनासकांठा, पाटन, सुरेंद्र नगर, सूरत, मेहसाणा, भरूच, भावनगर, राजकोट, वड़ोदरा, खेड़ा

आर्थिक महत्व : यह फसल सबसे अधिक किफायती और उपयोगी वार्षिक दलहनी फसल है। यह संभवतः आनुवांशिक बफरिंग के कारण होता है, जो मृदा नमी और पोषण की कमी के तेजी से उतार–चढ़ाव वाली परिस्थितियों के लिए जल्दी से समायोजित और अनुकूल होने के लिए इस शुष्क दलहन में निहित है।

फसल उत्पाद :

- साबुत अनाज, अंकुरित रूप में, साथ ही साथ दाल के रूप में विभिन्न प्रकार से उपभोग किया जाता है।
- हरी फली सब्जियों का स्वादिष्ट स्रोत है।
- नमकीन उत्पाद– पापड़, भुजिया, नमकीन, अंकुरित।
- भोजन, चारा, हरी खाद और हरे चारागाह के स्रोत के रूप में उपयोग किया जाता है।

उन्नत प्रजातियां :

वर्ष	प्रजातियां
2002	मारू बहार (आर.एम.ओ.–435)
2003	काजरी मोठ 2
2004	आर.एम.ओ.–423, आर.एम.बी.–25 (आर.एम.ओ.–2004), जी.एम.ओ. 2
2005	काजरी मोठ 3
2007	आर.एम.ओ.–257, टी.एम.वी. (Mb)1
2016	आर.एम.ओ.–2251 (I)

राज्य–वार अनुशसित प्रजातियां :

राज्य	प्रजातियां
गुजरात	जी.एम.ओ. 1, जी.एम.ओ. 2
राजस्थान (प्रजाति विमोचन वर्ष)	आर.एम.ओ.–257, आर.एम.ओ.–435, आर.एम.ओ.–2004 (आर.एम.बी.–25), आर.एम.ओ.–225 (1995), आर.एम.ओ.– 40 (1994), एफ.एम.एम. 96 (1997), मोठ 880 (1989), ज्वाला (1985)
महाराष्ट्र	राजस्थान की अगेती किस्में
हरियाणा	राजस्थान की अगेती किस्में

प्रकाशक : निदेशक, दलहन विकास निदेशालय, भारत सरकार, भोपाल, म.प्र.
वेबसाइट : www.dpd.gov.in

भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
(कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग)
दलहन विकास निदेशालय
छठवीं मंजिल, विन्ध्याचल भवन
भोपाल-462004 (म.प्र.)

सत्यमेव जयते

Government of India
Ministry of Agriculture & Farmers Welfare,
Deptt. of Agriculture, Cooperation & Farmers Welfare
Directorate of Pulses Development
6th Floor, Vindhyachal Bhavan
Bhopal - 462004 (M.P.)

E-mail: dpd.mp@nic.in, Telefax: 0755-2571678, Phone: 0755-2550353/ 2572313

बुवाई ऋतु : खरीफ

बुवाई समय : जुलाई का द्वितीय से तृतीय सप्ताह;
बुवाई में देरी के परिणामस्वरूप कम वृद्धि, खराब अंकुरण, अधिक पौध मृत्यु दर, कीटों और बीमारियों का प्रकोप और फूल वाली अवस्था पर सबसे अधिक स्पष्ट रूप से नमी का तनाव जो कि सबसे क्रांतिक अवस्था होती है।

फसल अंतराल : 30–45 से.मी. x 10–20 से.मी.

बीज गहराई : 2.5–4 से.मी.

बीज दर : दाने के लिए– 10–15 कि.ग्रा./ हे.; **मिश्रित फसल :** 4–5 कि.ग्रा./ हे.;
चारा के लिए : 20–25 कि.ग्रा./ हे.

बीजोपचार : कार्बेन्डाजिम @ 2 ग्रा./कि.ग्रा. बीज।

कल्चर एवं सूक्ष्म पोषक तत्व : राईजोबियम और पी.एस.बी. प्रत्येक की 5–7 ग्राम/कि.ग्रा. बीज की दर से उपयोग करें।

मिट्टी का प्रकार : यह उचित जल निकासी क्षमता वाली कपास की काली मिट्टी से रेतीले दोमट में उगाया जा सकता है।

जलवायु : यह पुष्पन और फली के विकास पर किसी भी प्रतिकूल प्रभाव के बिना उच्च तापमान को सहन कर सकता है। वृद्धि और विकास के लिए इष्टतम तापमान की आवश्यकता 25–37 डिग्री सेंटीग्रेड होती है। वार्षिक वर्षा 250–500 मिमी. व साथ ही उचित जल निकास की आवश्यकता होती है।

पौध पोषक तत्व : बुवाई के समय 10–15 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 30–40 कि.ग्रा. फॉस्फोरस को आधार उर्वरक के रूप में दें।

खरपतवार नियंत्रण : बुवाई के पूर्व फ्लुक्लोरेलिन (बासालिन) @ 0.5 से 1 किलोग्राम सक्रिय तत्व/हे. को खेत में मिला दें व बुवाई के 30 दिन बाद एक निंदाई करने से उचित खरपतवार नियंत्रण हो जाता है।

उर्वरक का प्रयोग मृदा परीक्षण रिपोर्ट पर आधारित होना चाहिए।

सिंचाई : इसकी खेती शुष्क भूमि और वर्षा आधारित स्थिति में की जाती है, लेकिन लंबे समय तक वर्षा न होने की दशा में एक सिंचाई फली बनाने की अवस्था में दी जानी चाहिए।

फसल प्रणाली :

- आमतौर पर एकल फसल के रूप में शुद्ध या मिश्रित फसल उगायी जाती है। हालांकि, अच्छी वर्षा वाले वर्ष में, इसके बाद सरसों की फसल उगा सकते हैं।
- मानसून के दौरान जोखिम वाले क्षेत्रों में बाजरा, ग्वार, लोबिया, मूंग और तिल के साथ मिश्रित फसल ले सकते हैं। अनुशंसित किस्मों में आरएमओ 40 और एफएमएम 96 मोठ की और बाजरा की एचएचबी 67 किस्म हैं।
- अंतर्वर्ती फसल (2:1) – बाजरा की दो पंक्तियों के बीच मोठ की 2/3 पंक्तियां।

कटाई/थ्रेसिंग और भंडारण : फली परिपक्व हो जाती है और पत्तियां भूरी या पीली हो जाती हैं। कटाई के बाद गहाई, परिवहन, प्रसंस्करण और भंडारण के दौरान नुकसान का अनुमान 9–10 प्रतिशत होता है। धूप में सुखाना, गर्म उपचार व कम तापमान में भंडारण के साथ बीज में कम नमी प्रतिशत (8–9%) भंडारण के लिए अनुशंसित है।

मृदा/पत्तियों के कीट एवं प्रबंधन :

दीमक : मृदा अनुप्रयोग– बुवाई से पहले फोरेट @ 1.25 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व/हे.

पल्स बीटल *calosobruchus chinensis* : *i)* भंडारण से पहले बीज की नमी का स्तर 10% से नीचे होना चाहिए; *ii)* धूमन; *iii)* नीम की पत्तियों/केक और खाद्य तेलों के साथ मिश्रण/स्मियरिंग।

उपज : चारा – 12–25 क्विंटल/हे.; **अनाज –** 3–8 क्विंटल/हे.

कीट व्याधि और रोग प्रबंधन :

कीट	सक्रिय अवधि	घटना	प्रबंधन
चूसक कीट			
जेसिड्स, सफेद मक्खी, माहू	अगस्त का द्वितीय सप्ताह से कटाई तक	नियमित	i) अगेती बुवाई; ii) बाजरा के साथ अंतर्वर्ती (1:4); iii) फोरेट @ 1.25 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व का उपयोग 4 सप्ताह तक प्रभावी होता है।
एफिड और घुन, सफेद कीड़ा	अगस्त का द्वितीय सप्ताह से सितम्बर के प्रथम सप्ताह	कभी–कभी निम्न कीट	

रोग	लक्षण	प्रबंधन
एंथ्रेक्नोज (Collectotrichum spp.)	काले केंद्रों के साथ परिपत्र, काले चित्तेदार धब्बे और पत्तियों और फली पर चमकदार लाल या नारंगी किनारे। गंभीर संक्रमण में प्रभावित हिस्से मुरझा जाते हैं।	i. कार्बेन्डाजिन 2 ग्राम / किलोग्राम बीज के साथ बीजोपचार करें। ii. मेंकोजेब @ 2.5 ग्राम/लीटर पानी के साथ फसल पर छिड़काव करें।

संकलन एवं संपादन
• डॉ. पु.के. तिवारी, निदेशक
• डॉ. पु.के. शिवहरे, संयुक्त निदेशक
• डॉ. संदीप सिलावट, वरिष्ठ तकनीकी सहायक
• श्री सरजू पल्लेवार, सांख्यिकी अन्वेषक
प्रकाशन वर्ष 2021